सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_Sanjay | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 10 ● अंकः 198 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शनिवार, 24 अगस्त, 2024

मूल्य ₹ 3/-

विफलता बस फिर से शुरू करने का अवसर है, इस बार और अधिक समझदारी से।

-हेनरी फोर्ड

शिखर धवन ने क्रिकेट को कहा... 7 | उम्मीदवार चुनना सबसे बड़ा... 3 | भाजपा के कार्यकर्ता भाग रहे... 2

4PM के कार्यक्रम में संजय शर्मा के सवाल और अखिलेश के जवाब देश भर में वायरल

» तीखे सवालों के मजेदार जवाब देकर लोगों को अपना दीवाना बना दिया अखिलेश यादव ने

» योगी और केशव मौर्य को लेकर गजब कटाक्ष किये अखिलेश ने

देश के नंबर वन यूट्यूब चैनल 4PM के 6 मिलियन सब्सक्राइबर पूरे होने पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया और दर्शकों के मिले प्यार का जश्न मनाया गया। 4PM के इस जश्न का हिस्सा उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव भी बने। इस खास मौके पर 4PM के संपादक संजय शर्मा ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव से एक खास बातचीत भी की। इस बातचीत के दौरान सपा प्रमुख ने लोकसभा चुनाव के नतीजों से लेकर यूपी बीजेपी में मची कलह और केशव प्रसाद मौर्य को दिए ऑफर तक के बारे में विस्तार से बात की। साथ ही कांग्रेस के साथ गठबंधन का भविष्य और इंडिया गठबंधन की आगे की रणनीति के बारे में भी अखिलेश ने विस्तार से बताया। अपनी हाजिरजवाबी के लिए मशहूर अखिलेश यादव ने बातचीत के दौरान योगी और केशव को लेकर कई मजेदार जवाब दिए। प्रस्तुत है इस बातचीत के कुछ अंश:-

4PM विशेष साक्षात्कार

➤ **क्या आपने सोचा था कि लोकसभा में आपकी इतनी सीटें आ जाएंगी ? आपकी पार्टी के कई नेता मुझसे कहते थे कि 15-20 सीटें आ जाएं तो बहुत हैं।**

➤ हमने अपने साथ काम करने वालों को पहले ही बोल दिया था कि इस बार भाजपा हारने जा रही है। छठे चरण के बाद मैं ये कहने लगा था कि बीजेपी 79 सीटें हार रही है और सिर्फ एक सीट जो क्यूटो (वाराणसी) है वो भी फंस रही है। नतीजों में देखिए ये ही हुआ है। मुझे पूरा यकीन था कि हम लोग 40 से ऊपर चले जाएंगे। अगर मुख्यमंत्री के इशारे पर प्रदेश के अधिकारियों ने बेईमानी न की होती तो आज यूपी में 50 सीटें सपा और इंडिया गठबंधन की होतीं और दिल्ली में बीजेपी की सरकार नहीं होती।

➤ **आप संसद में कटाक्ष करते हैं कि हटा नहीं पा रहे हैं। आपकी योगी जी से क्या दुश्मनी है? आप उन्हें क्यों हटवाने पर तुले हैं?**

➤ मेरी कोई दुश्मनी नहीं है। वो काम तो अच्छा करें, किसने रोका है उन्हें। दिल्ली की सरकार उनकी, यूपी की सरकार उनकी, लेकिन फिर भी लखनऊ में वो कोई बड़ा काम नहीं बता पाएंगे। हमारे ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने आज तक एक भी बिजली का कारखाना नहीं लगाया। जो एक्सप्रेस-वे बनाए हैं वो भी तुरंत ही रिपेयर मांग रहे हैं। मुख्यमंत्री जी का प्रिय जानवर हर सड़क पर दिखाई दे रहा है। मैंने तो अब वीडियोज सोशल मीडिया पर डालना ही छोड़ दिया। प्रदेश की पूरी ट्रैफिक ही उस जानवर के हाथ में है। प्रतिदिन एक व्यक्ति उनके हमले से मर रहा है। लेकिन हमारे मुख्यमंत्री जी नकल बहुत अच्छी करते हैं। दिल्ली ने कहा हम इतने ट्रिलियन इकोनॉमी बना देंगे, तो मुख्यमंत्री ने कह दिया हम प्रदेश की 1 ट्रिलियन इकोनॉमी बना देंगे। 1 ट्रिलियन इकोनॉमी बनाने के लिए 30 प्रतिशत जॉब रेट चाहिए, तो कह रहे हैं हमने करोड़ों को नौकरी दे दी। ये भी तो बता दें कहां दी? एमओयू तो लाखों-करोड़ों के कर लिए, लेकिन जमीन पर क्या आया? ऐसे तमाम सवालों का जवाब सरकार के पास नहीं है, इसीलिए हम उनके खिलाफ खड़े दिखाई पड़ रहे हैं।

➤ **उत्तर प्रदेश के एक नेता हैं आप उनके पीछे पड़े रहते हैं। कभी उन्हें स्टूल मंत्री कहते हैं, कभी आप उनका मजाक उड़ाते हैं। आप केशव प्रसाद मौर्य से इतने मजे क्यों लेते हैं? उन्हें चुनाव हरवा दिया। क्या दिक्कत है आपको उनसे ?**

➤ मैं नहीं करता। न्यूज में रहने के लिए वो ऐसा हमारे खिलाफ बोलते हैं। वो स्टूल नहीं, स्टूल किट मंत्री हैं। आवाज बहुत आती है उधर से। मैंने तो नहीं कहा आप मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं, वो ही तो बनना चाहते हैं। हमने तो ऑफर भी दिया उन्हें। हम भी इंतजार करते रहे कितने दिन ऑफर चलाएं, फिर हमने ऑफर ही समाप्त कर दिया।

➤ **कांग्रेस के साथ क्या भविष्य रहेगा? क्या हरियाणा-महाराष्ट्र में इंडिया गठबंधन के तहत आप कांग्रेस से सीटें मांगेंगे?**

➤ गठबंधन पर कांग्रेस से बात करेंगे। प्रयास करेंगे आगे हम उत्तर प्रदेश में भी और सीटें जीतें। अन्य राज्यों पर बात की जाएगी। कांग्रेस वाले जानते हैं हम समाजवादी लोग हैं हम किसी बात पर जिद नहीं करते। हमने उनकी जिद मानी है, लेकिन हम जिद नहीं करते। लेकिन ये सपना हर दल का होता है कि वो राष्ट्रीय पार्टी बने। आने वाले समय में समाजवादी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी कैसे बनेगी, उस दिशा में काम करेंगे।

➤ **क्या आपके ऑफर में कुछ लोग अपना माल बेचने आए थे ?**

➤ हमने तो अपील की थी, लेकिन उनके पास कुछ होता तो हम भी सहयोग करते। फिर ऑफर ही बंद करना पड़ा मुझे।

➤ **आप रणनीति से सरकार बदलना चाहते हैं उत्तर प्रदेश की?**

➤ मैं नहीं बदलना चाहता। जनता हटाना चाहती है। जिस दिन यूपी बीजेपी मुक्त हो जाएगा, उस दिन ही खुशहाली के रास्ते पर चल देगा।

➤ **योगी जी और केशव में बेहतर नेता कौन है?**

➤ दोनों ही खराब नेता हैं।

➤ **दोनों में ज्यादा खराब कौन है?**

➤ ये मत पूछिए, जो लोग उनसे मिलते होंगे वो बता सकते हैं ज्यादा खराब कौन है।

➤ **10 विधानसभा सीटों पर यूपी में उपचुनाव होने हैं। लोगों का मानना है कि ये चुनाव तय करेंगे योगी आदित्यनाथ यूपी के सीएम रहेंगे या हटा दिए जाएंगे। समाजवादी पार्टी की क्या तैयारी है? कितनी सीटें जीत पाएगी?**

➤ ईमानदारी से चुनाव हुआ और चुनाव आयोग ने शिकायतों पर एक्शन लिया तो भाजपा शून्य सीटें जीतेगी।

साक्षात्कार का शेष भाग पेज 4-5 पर

भाजपा के कार्यकर्ता भाग रहे हैं : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले - भाजपाइयों ने हार स्वीकारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा पर जबरदस्त हमला बोला है। सपा प्रमुख ने कहा है कि अब जब भाजपा के संगी-साथी कह रहे हैं कि वे बूथ पर जाकर व्यवस्था संभालेंगे। इसका मतलब साफ है कि वे ये मानकर चल रहे हैं कि भाजपा का कार्यकर्ता हताश होकर बूथ छोड़कर भाग चुका है या फिर भाजपा के संगी-साथियों को भाजपा के कार्यकर्ताओं पर भरोसा नहीं रहा है।

अखिलेश ने कहा कि लोकसभा चुनाव में हार के बाद भाजपा के भीतर के गुटों ने एक-दूसरे पर विश्वास खो दिया है। इसका एक और पहलू यह भी है कि भाजपा का 'संगी-साथी' पक्ष ये दिखाना चाहता है कि हार का कारण वो नहीं था, वो तो अब भी शक्तिशाली हैं, कमजोर तो भाजपा हुई है। इन दोनों ही परिस्थितियों में यह तो साबित होता है कि भाजपाइयों ने हार स्वीकार कर

ली है। वहीं सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक कार्यक्रम में कहा कि महाराष्ट्र और हरियाणा को लेकर कांग्रेस नेतृत्व को अपनी बात बता दी है। ऐसे में माना जा रहा है कि यूपी की सीटों पर साझेदारी हरियाणा और महाराष्ट्र पर निर्भर करेगी। अगर इन दो राज्यों में सपा को हिस्सेदारी नहीं मिली तो यूपी में भी सपा, कांग्रेस को कोई सीट देने की इच्छुक नहीं है।

सपा हरियाणा में भी लड़ेगी चुनाव

सपा हरियाणा विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन के तहत सीटें लेने पर अड़िग है। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस नेतृत्व को बता दिया गया है कि अगर हरियाणा में सपा कमजोर है तो यूपी में भी कांग्रेस मजबूत नहीं है। उपचुनाव वाली जिन सीटों पर कांग्रेस चुनाव लड़ने का दावा कर रही है, वर्ष 2022 के चुनाव में वहां कांग्रेस की हालत बेहद खराब रही थी। राजनीतिक सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस ने यूपी के उपचुनाव में 3 से 5 सीटें मांगी हैं, तो सपा ने हरियाणा और महाराष्ट्र में दावा ठोका है। हरियाणा में विधानसभा चुनाव का कार्यक्रम जारी हो चुका है। सपा का कहना है कि हरियाणा में 11 सीटें यादव बहुल और 7 सीटें मुस्लिम बहुल हैं। इनमें से सपा 5 सीटें मांग रही है। दूसरी ओर बताते हैं कि कांग्रेस की हरियाणा इकाई के नेता सपा को साझेदारी के तहत सीटें देने के लिए तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि यहां सपा का जनाधार ही नहीं है।

आखिर कब तक सीएम नीतीश जिम्मेदारी से भागते रहेंगे : तेजस्वी

» नेता प्रतिपक्ष बोले-15 साल से अधिक बिहार में एनडीए की सरकार लेकिन काम मेरे साथ रहने के दौरान ही हुआ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार पर हमला बोला है। तेजस्वी यादव ने कहा कि पिछले 15 साल से अधिक बिहार में भाजपा और एनडीए की सरकार है। 10 वर्षों से केंद्र में इनकी डबल इंजन सरकार है। हमारे बीच के 17 महीनों के सेवाकाल में ही नौकरी-रोजगार, शिक्षा-स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में रिकॉर्डतोड़ नियुक्तियां एवं अप्रत्याशित विकास कार्य हुए। लगभग दो दशक बाद भी आखिर और कब तक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार व भाजपा दूसरों के ऊपर दोष मढ़ अपनी जिम्मेदारी से भागते रहेंगे।

तेजस्वी यादव ने कहा कि आखिर देश में सबसे अधिक बिहार में व्याप्त इस रिकॉर्डतोड़ महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, अपराध के जिम्मेदार कौन है? आखिर कब तक नीतीश कुमार अपनी सत्तालोलुपता, स्वार्थपूर्ति व अनैतिक असैद्धांतिक पलटा-पलटी का शिकार बिहार को बनाते रहेंगे। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि जनता से जुड़े मुद्दों

राजद नेता ने कहा- इन चीजों में टॉप पर है बिहार

- महंगाई के मामले में देश भर में बिहार सबसे टॉप पर है।
- देश में सबसे अधिक गरीबी बिहार में है।
- देश में सबसे अधिक बेरोजगारी बिहार में है।
- देश में सबसे ज्यादा अपराध बिहार में है।

का जिक्र किया। इसमें बिहार को उन्होंने सबसे नीचे और सबसे कम बताया। नीति आयोग के सत्तत विकास सूचकांक में सबसे नीचे बिहार है। गरीबी उन्मूलन में सबसे नीचे बिहार है। आमदनी में देश भर में सबसे कम बिहार में है। शून्य भुखमरी में सबसे नीचे बिहार है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लैंगिक समानता में सबसे पीछे बिहार है।

विनेश फोगाट हरियाणा में लड़ सकती हैं विस चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक में 100 ग्राम ज्यादा वजन की वजह से पदक जीतने से चूकीं भारतीय पहलवान विनेश फोगाट ने दिल्ली में हरियाणा के सांसद दीपेंद्र हुड्डा और उनके परिवार के साथ मुलाकात की। इससे राजनीतिक गलियारों में ऐसी अटकलें तेज हो गईं कि कुश्ती से संन्यास की घोषणा कर चुकीं विनेश जल्द ही कांग्रेस के साथ राजनीतिक पारी शुरू कर सकती हैं।

हरियाणा के सांसद हुड्डा ने विनेश के साथ मुलाकात की फोटो सोशल मीडिया पर साझा की। चर्चाएं तो ये भी रहीं कि विनेश शुक्रवार को प्रियंका गांधी वाड्रा और पार्टी के अन्य नेताओं से भी मिलने वाली हैं। वह खिलाड़ियों के धरने के दौरान उनसे मिली थीं। वैसे, स्वदेश लौटने के बाद से ही विनेश फोगाट लगातार हुड्डा परिवार के साथ संपर्क में हैं। यह उनकी तीसरी मुलाकात थी। हालांकि इस बारे में फिलहाल विनेश या उनके परिवार की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। मुलाकात के बाद हुड्डा ने

» पूर्व सांसद दीपेंद्र हुड्डा से की मुलाकात

मीडिया से बातचीत की। उन्होंने विनेश के कांग्रेस में शामिल होने की बात को काल्पनिक बताया। उन्होंने कहा एथलीट सिर्फ पार्टी के नहीं होते बल्कि पूरे देश के होते हैं। यदि कोई पार्टी में शामिल होता है तो इसका पता चल ही जाता है। जो भी पार्टी में आता है, उनका हम स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा- विनेश के साथ अन्याय हुआ है।

प्रियंका गांधी से भी मिलेंगी

बताया जा रहा है कि इसके बाद प्रियंका गांधी से विनेश मुलाकात कर सकती हैं। पेरिस ओलंपिक में उम्दा प्रदर्शन के बाद प्रियंका ने सोशल मीडिया पर बधाई देकर विनेश से मिलने की इच्छा जताई थी। यह मुलाकात इसी संदर्भ में देखी जा रही है। हालांकि पिछले कुछ दिनों से विनेश के कांग्रेस में शामिल होने और चुनाव लड़ने की चर्चाएं हैं।

आगामी विस चुनाव को लेकर तैयारी में जुटी कांग्रेस

» उप्र के गांवों-गावों में खाक छानेंगे पार्टी के कार्यकर्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में विधानसभा चुनाव होने में अभी लगभग ढाई साल से ज्यादा का समय है। पर लोक सभा चुनाव में सफल हुई कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारी अभी से शुरू कर दी है। प्रदेश कांग्रेस के मुखिया ने संगठन को दुरुस्त करने के साथ ही क्षेत्रवार वोटबैंक का आकलन पर मेहनत करनी शुरू कर दिया है। इसके लिए पार्टी ने जिले स्तर तक अपने कार्यकर्ताओं को सक्रिय होने के निर्देश दिए हैं।

पार्टी प्रदेश की सभी 403 विधानसभा सीटों को तीन श्रेणी में बांट रही हैं। पहली श्रेणी में करीब 175 सीटें रखी जाएंगी। पार्टी के प्रदेश महासचिव संगठन अनिल यादव जिलों का दौरा कर चुके हैं। इन जिलों में अगले माह से प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व मंत्री अजय राय कार्यकर्ताओं को चुनाव जीतने का मंत्र देंगे। लोकसभा चुनाव में सपा-कांग्रेस का गठबंधन था। सामाजिक न्याय, जाति जनगणना और संविधान रक्षा के मुद्दे पर पार्टी को समर्थन मिला। कांग्रेस एक सीट से बढ़कर छह पर पहुंच गई हैं।

प्रदेश महासचिव ने शुरू किया दौरा

पार्टी के प्रदेश महासचिव अनिल यादव पश्चिम और पूर्वांचल के करीब 25 जिलों का दौरा कर चुके हैं। इस दौरान पार्टी नेताओं के साथ बैठक कर संगठनात्मक ढांचा सुधार की रणनीति बनाई गई और भविष्य की तैयारियों पर चर्चा की गई। साथ ही कांग्रेस से साथ जुड़ने वाले वोटबैंक का आकलन किया गया। इसके लिए संबंधित जिलों के सक्रिय पदाधिकारियों को लक्ष्य दिए गए हैं। ये पदाधिकारी विधानसभा क्षेत्रवार कांग्रेस की अब तक रही पैठ, वोटबैंक, जातिगत आंकड़ा और पिछले पांच चुनावों में हार-जीत के अंतर, पार्टी के लिए कौन सा मुद्दा मुफीद रहेगा, इसका ब्योरा तैयार करेंगे। दूसरे चरण में प्रदेश अध्यक्ष अजय राय इन जिलों का दौरा करेंगे। उस वक्त चिह्नित किए गए सक्रिय पदाधिकारियों की जिम्मेदारी बढ़ाई जाएगी।

स्थानीय मुद्दे को देंगे तरजीह : अजय राय

अजय राय ने कहा कि सामाजिक न्याय के मुद्दे पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी लगातार सक्रिय हैं। उन्होंने सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष का एलान किया है। प्रदेश में भी जनता के हितों की रक्षा लिए पार्टी सक्रिय है। हम सामाजिक न्याय के साथ ही स्थानीय मुद्दों को भी वरीयता के आधार पर उठा रहे हैं। यह सिलसिला अगले माह से विधानसभा क्षेत्रवार शुरू हो जाएगा। जहां भी जनता का शोषण होगा, उस विधानसभा में विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। प्रदेश के विधानसभा क्षेत्रों को तीन श्रेणी में बांटा जाएगा। करीब 175 सीटों को पहली श्रेणी में रखा जाएगा। ताकि सपा के साथ गठबंधन पर बात चले तो इन सीटों की मांग की जा सके। पार्टी की रणनीति है कि हर जिले की कम से कम दो विधानसभा सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार उतारा जा सके।

दिल्ली के एलजी ने सचिव को हटाया

» यमुना खेल परिसर के खराब रखरखाव पर हुई कार्रवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने स्टेडियम के रखरखाव में लापरवाही के लिए डीडीए के यमुना खेल परिसर के सचिव को हटाने का आदेश दिया है। राजनिवास के अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि सक्सेना ने हाल ही में पूर्वी दिल्ली में स्थित खेल परिसर का दौरा किया और अगले दो महीने में इस प्रतिष्ठित स्थल को पूरी तरह से नया रूप देने का निर्देश दिया। अधिकारियों ने कहा, रखरखाव के मामले में भयावह स्थिति से

नाराज सक्सेना ने खेल परिसर के प्रभारी अधिकारियों को तुरंत हटाने का निर्देश दिया है। सक्सेना ने स्टेडियम के रखरखाव के प्रति उदासीनता और उपेक्षा पर नाराजगी जताई, जहां राष्ट्रमंडल खेल 2010 में तीरंदाजी और टेबल टेनिस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

आखिर क्यों बढ़ रही स्कूली छात्रों में हिंसक प्रवृति!

क्या भारत क्या दुनिया के अन्य देश हर जगह से किशोरों या स्कूली छात्रों द्वारा एक दूसरे पर जरा जरा सी बात पर नाराज होकर हिंसा पर उतारू हो जाने की खबरें आना आम हैं। अभी उदयपुर में मामूली सी बात पर एक स्कूली बच्चे ने अपने मित्र पर चाकू से हमला कर दिया जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई। इस तरह की बढ़ती घटनाओं पर समाज में चर्चा होने लगी है कि आखिर स्कूली बच्चों में पिछले कुछ समय से हिंसक प्रवृत्ति तेजी से क्यों बढ़ रही है, जो समाज के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं है। समाजविज्ञानी यह मानते हैं कि मोबाइल पर पबजी जैसे खतरनाक गेम और वेब सीरीज बच्चों को हिंसक बना रही है। इसतरह की घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत है। नीति नियंताओं को इसपर विचार करना जरूरी है कि इस तरह की घटनाएं अब आगे न हों। भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति चिन्ताजनक है। पिछले कुछ समय से स्कूली बच्चों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी एवं खौफनाक है।

चिंता का बड़ा कारण इसलिए भी है क्योंकि जिस उम्र में बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है, उसी उम्र में कई बच्चों में आक्रामकता घर करने लगी है और उनका व्यवहार हिंसक होता जा रहा है। जिस उम्र में बच्चों को पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद में व्यस्त रहना चाहिए, उसमें उनमें बढ़ती आक्रामकता, हिंसा एवं क्रूरता एक अस्वाभाविक और परेशान करने वाली बात है। कई घटनाओं में स्कूल में पढ़ने वाले किसी बच्चे ने अपने सहपाठी पर चाकू या किसी घातक हथियार से हमला कर दिया और उसकी जान ले ली। अमेरिका की तर्ज पर भारत के बच्चों में हिंसक मानसिकता का पनपना हमारी शिक्षा, पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना पर कई सवाल खड़े करती है। यह दुष्प्रवृत्ति बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर तो नकारात्मक प्रभाव डाल ही रही है, इसे भविष्य में समाज की शांति के लिए बड़ा खतरा भी मानना चाहिए। बड़ा सवाल है कि जिन वजहों से बच्चों के भीतर आक्रामकता एवं हिंसा पैदा हो रही है, उससे निपटने के लिए क्या किया जा रहा है! पाठ्यक्रमों का स्वरूप, पढ़ाई-लिखाई के तौर-तरीके, बच्चों के साथ घर से लेकर स्कूलों में हो रहा व्यवहार, उनकी रोजमर्रा की गतिविधियों का दायरा, संगति, सोशल मीडिया या टीवी से लेकर उसकी सोच-समझ को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों से तैयार होने वाली उनकी मन:स्थितियों के बारे में सरकार, समाजकर्मी एवं अभिभावक क्या समाधान खोज रहे हैं। सभी स्तरों पर विचार करना आवश्यक है। सरकारों के साथ समाज व परिवारों को भी सजग होना होगा।

समाजविज्ञानी यह मानते हैं कि मोबाइल पर पबजी जैसे खतरनाक गेम और वेब सीरीज बच्चों को हिंसक बना रही है। इसतरह की घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत है। नीति नियंताओं को इसपर विचार करना जरूरी है कि इस तरह की घटनाएं अब आगे न हों। भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति चिन्ताजनक है। पिछले कुछ समय से स्कूली बच्चों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी एवं खौफनाक है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कड़े कानून नहीं, सोच बदलने से थमेगी यौन हिंसा

विश्वनाथ सचदेव

कोलकाता के एक अस्पताल में हुए जघन्य कांड की गुत्थी अभी सुलझी नहीं है। पश्चिम बंगाल की पुलिस को अक्षम ठहराकर मामला सीबीआई को सौंप दिया गया है। उच्चतम न्यायालय ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए स्वत: संज्ञान लिया है। उधर देशभर के डॉक्टरों का विरोध-प्रदर्शन जारी है। वे सुरक्षा की गारंटी मांग रहे हैं। इस मांग के औचित्य पर किसी को संदेह नहीं होना चाहिए, लेकिन जिस तरह सारे मामले को राजनीति का हथियार बनाया जा रहा है उसे देखते हुए न्याय की मांग करने वालों के इरादे पर संदेह व्यक्त किया जा रहा है। निस्संदेह मामला बहुत गंभीर है और बलात्कार का यह मुद्दा कानून-व्यवस्था के लिए जिम्मेदार एजेंसियों की अक्षमता को भी उजागर करने वाला है। उम्मीद ही की जा सकती है कि अपराधी शीघ्र ही पकड़े जाएंगे और मरीजों को अस्पतालों में समुचित चिकित्सा मिलेगी, डॉक्टर को बिना डरे अपना काम करने का माहौल मिलेगा।

मरीजों और डॉक्टरों के प्रति हमारी व्यवस्था को कम से कम इतना तो करना ही चाहिए। इस मामले में न्याय मांगने वाले अपराधी या अपराधियों को कड़े से कड़ा दंड, फांसी, दिये जाने की मांग कर रहे हैं। निश्चित रूप से अपराधी को ऐसा दंड मिलना ही चाहिए जो शेष समाज को यह चेतावनी देने वाला हो कि किसी भी सभ्य समाज में ऐसी नृशंसता को स्वीकार नहीं किया जा सकता। लेकिन यहां इस बात को भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि कड़ी से कड़ी सजा का एक परिणाम यह भी निकल रहा है कि अपराधी सबूत को मिटाने के चक्कर में बलात्कार के बाद हत्या का मार्ग अपना रहे हैं। दिल्ली की 'निर्भया' से लेकर कोलकाता की 'निर्भया' तक की यह शृंखला यही बता रही है कि मनुष्यता के खिलाफ किए जाने वाले इस अपराध- बलात्कार के दोषी सिर्फ कड़े कानूनों से नहीं डर रहे हैं। जिस दिन कोलकाता के एक अस्पताल में यह जघन्य कांड हुआ, उसके बाद उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड जैसे देश के अन्य हिस्सों में भी बलात्कार-हत्या की घटनाएं सामने आने लगीं।

यह स्थिति निश्चित रूप से भयावह है। स्पष्ट दिख रहा है कि अपराधियों को कानून-व्यवस्था का डर नहीं रहा, कहीं न कहीं उन्हें लग रहा है कि कानून उनकी मनमानी को रोकने में सक्षम नहीं है। स्थिति की गंभीरता और भयावहता को कुछ आंकड़े उजागर कर सकते हैं।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) की गणना के अनुसार हमारे देश में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में बलात्कार चौथा सबसे गंभीर अपराध है। प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2021 में देश में बलात्कार के 31,677 मामले दर्ज हुए थे, अर्थात रोज 86 मामले यानी हर घंटे चार। ज्ञातव्य है कि इसके पहले के दो वर्षों में यह संख्या कम थी- सन 2020 में 28,046 मामले और सन 2019 में 32,033 मामले। यह आंकड़े तो उन अपराधों के हैं, जो थानों में दर्ज हुए। हकीकत यह है कि आज हमारे देश में कम से कम इतने ही मामले थानों में दर्ज नहीं होते! यह मानकर कि अपराधियों को सजा नहीं मिलेगी, पीड़ित पक्ष 'पुलिस के चक्कर' में पड़ते ही नहीं। साथ ही बलात्कार की शिकार महिलाएं और उनके परिवार वाले समाज के 'डर' से भी पुलिस के पास जाने में हिचकिचाते हैं। बलात्कार स्त्री पर किया गया जघन्य अपराध है, लेकिन हमारे यहां बलात्कार की शिकार महिलाओं को ही संदेह और नीची दृष्टि से देखा जाता है! आज मुख्य सवाल इस दृष्टि के बदलने का है। और यह काम सिर्फ कड़े कानून से नहीं होगा। बलात्कार करने वाले को कड़ी से कड़ी सजा मिले, यह सब चाहते हैं, लेकिन यह बात कोई नहीं समझना चाहता कि आवश्यकता उस दृष्टि को बदलने की है जो महिला को एक वस्तु मात्र समझती है। अपराधी यह दृष्टि भी है। सजा इसे भी मिलनी चाहिए- इस दृष्टि को बदलने की ईमानदार कोशिश होनी चाहिए। आज जीवन के हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से कहीं आगे हैं वे। इसके बावजूद उन्हें कमजोर समझा-कहा जाता है। यह उसी सोच का परिणाम है जो अबला जीवन को 'आंचल में दूध और पलकों में पानी' से आगे नहीं देखना चाहता। इस सोच को बदलने की जरूरत है।

नारी को पुरुष के सहारे की नहीं, बराबरी के सहयोग की आवश्यकता है और पुरुष को यह समझना होगा कि वह भी नारी के सहयोग के बिना अधूरा है। जितनी आवश्यकता नारी को पुरुष की है, उतनी ही आवश्यकता पुरुष को भी नारी की है। यह काम कानून को कड़ा बनाने से नहीं, समाज की सोच को बदलने से होगा। हम देख रहे हैं कि इस संदर्भ में कानून को कड़ा बनाना अपराध और अधिक जघन्य बना रहा है, उम्मीद करनी चाहिए कि कानून अपना काम करेगा और समाज की सोच भी बदलेगी। इस दिशा में बहुत कुछ किये जाने की आवश्यकता है।

निर्यात और निवेश के समक्ष नई चुनौतियां

जयंतीलाल भंडारी

कहा गया है कि इस समय वैश्विक परिदृश्य विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक अनिश्चितताओं से प्रभावित होने के कारण भारत के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। निस्संदेह, इन दिनों बांग्लादेश के राजनीतिक संकट, भयावह होते रूस-युक्रेन युद्ध, इस्त्राइल-ईरान संघर्ष और अमेरिका व जापान सहित दुनिया के कई देशों में मंदी की लहर के कारण भारत से निर्यात की रफ्तार और भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की चुनौतियां बढ़ गई हैं।

हालिया आंकड़ों के अनुसार भारत से वस्तुओं का निर्यात जुलाई 2024 में सालाना आधार पर 1.2 प्रतिशत घटकर 33.98 अरब डॉलर रहा। पिछले साल इसी महीने में निर्यात का मूल्य 34.39 अरब डॉलर था। जहां इस समय भारतीय निर्यातक बांग्लादेश के सियासी हालात को लेकर चिंतित हैं, वहीं वे चीन को किए जा रहे निर्यात में कमी से भी चिंतित हैं। साथ ही निर्यातकों को विदेशी बाजारों में कमजोर मांग और व्यापार में अन्य बाधाओं से जूझना पड़ रहा है। पिछले दिनों भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एग्जिम बैंक) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत के वस्तु निर्यात में वृद्धि जुलाई से सितंबर 2024 की तिमाही में घटकर 4 फीसदी रह सकती है। कहा गया है कि इस समय वैश्विक परिदृश्य विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक अनिश्चितताओं से प्रभावित होने के कारण भारत के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

निस्संदेह, इन दिनों बांग्लादेश के राजनीतिक संकट, भयावह होते रूस-युक्रेन युद्ध, इस्त्राइल-ईरान संघर्ष और अमेरिका व जापान सहित दुनिया के कई देशों में मंदी की लहर के कारण भारत से निर्यात की रफ्तार और भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की चुनौतियां बढ़ गई हैं। एक अगस्त से सरकार ने चीन सहित सीमावर्ती देशों से भारत में विनिर्माण परियोजनाओं से जुड़े टेक्नीशियनों के लिए नई वीजा व्यवस्था लागू कर दी है। वर्ष 2024-25 के आम बजट में भी इस परिप्रेक्ष्य में कारगर रणनीतियां दिखाई दे रही हैं। साथ ही वाणिज्य विभाग निर्यात प्रोत्साहन की दो महत्वपूर्ण योजनाओं को उनकी समाप्ति तिथि से आगे बढ़ने पर जोर दे रहा है। उल्लेखनीय है कि राजनीतिक अस्थिरता से भारत-बांग्लादेश व्यापार पर नया संकट खड़ा हो गया है। दक्षिण एशिया में बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है तथा बांग्लादेश भारत का 8वां सबसे बड़ा निर्यात बाजार भी है। पिछले वर्ष 2023-24 में भारत ने बांग्लादेश को 11 अरब डॉलर मूल्य का निर्यात किया है।

चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से जून, 2024 की पहली तिमाही में जहां निर्यात धीमी रफ्तार से बढ़े हैं, वहीं आयात की रफ्तार अधिक रहने से विदेश व्यापार घाटे में वृद्धि हुई है। इन तीन महीनों में कुल निर्यात 200.33 अरब डॉलर मूल्य के रहे हैं, जिसमें वस्तु निर्यात 109.96 अरब डॉलर और सेवा निर्यात 90.37 अरब डॉलर मूल्य के हैं। जबकि कुल आयात 222.90 अरब डॉलर मूल्य के हैं। जिसमें वस्तु आयात 172.23 अरब डॉलर और सेवा आयात 50.67 अरब डॉलर मूल्य के हैं। चूंकि इस वित्त वर्ष में भारत द्वारा कुल निर्यात का लक्ष्य पिछले वर्ष के कुल 776 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात से भी कुछ अधिक 800 अरब डॉलर की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचाना सुनिश्चित किया गया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि वैश्विक सुस्ती व बड़े देशों के बीच युद्ध की तनातनी से देश के एफडीआई परिदृश्य पर भी चुनौतियां बढ़ी हैं।

भारत में एफडीआई का प्रवाह 2023-24 में 3.49 प्रतिशत घटकर 44.42 अरब डॉलर रह गया। इसका कारण सेवा, कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, दूरसंचार, ऑटो और फार्मा जैसे क्षेत्रों में निवेश का कम रहना है। 2022-23 के दौरान एफडीआई का प्रवाह 46.03 अरब डॉलर था। पिछले वर्ष कुल एफडीआई जिसमें इक्विटी प्रवाह, पुनर्निवेशित आय और अन्य पूंजी शामिल हैं- एक प्रतिशत घटकर 70.95 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2022-23 में यह 71.35 अरब अमेरिकी डॉलर था। एक, वर्ष 2024-25 के बजट के तहत निर्यात बढ़ाने और एफडीआई आकर्षित करने के लिए सुनिश्चित किए गए अभूतपूर्व बजट आवंटनों का शुरुआत से ही कारगर उपयोग किया जाए। दो, सेवा निर्यात को हरसंभव तरीके से बढ़ाया जाए और सेवा क्षेत्र में एफडीआई आकर्षित की जाए। तीन, निर्यातकों को शुल्क के अलावा आने वाली बाधाओं (नॉन-टैरिफ बैरियर) से राहत दी जाए तथा एफडीआई की प्रक्रिया को और सरल बनाया जाए तथा चार, नए संभावित निर्यात बाजार तलाशे जाएं और एफडीआई के नए वैश्विक निवेशक खोजे जाएं।

इसमें कोई दोमत नहीं है कि एक अगस्त से लागू की गई व्यापार वीजा की नई व्यवस्था निर्यात व निवेश बढ़ाने में लाभप्रद होगी। 8वर्ष 2024-25 के बजट में वित्तमंत्री ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) को निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर सशक्त बनाया है। साथ ही इस सेक्टर के आयात में कमी के मद्देनजर प्रावधान किए गए हैं। नए बजट से सरकार ने जरूरी इकोसिस्टम को तैयार कर ठंडे पड़े मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में जान फूंकने और प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम को मजबूती देने के प्रावधान किए हैं। नए बजट में मशीनरी की खरीदारी के लिए क्रेडट गारंटी स्कीम लांच की गई है। इस स्कीम के तहत सेल्फ फाइनेंसिंग गारंटी फंड बनाया जाएगा जिसके तहत 100 करोड़ रुपए तक के लोन की गारंटी होगी। वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में कुछ वस्तुओं पर सीमा शुल्क में छूट दी गई है और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) के इस्तेमाल से जुड़े नियम सरल बनाए गए हैं, जो व्यापार नीति के लिहाज से सकारात्मक उपाय हैं।

सबको बांटने का काम करती है बीजेपी : अखिलेश

सांध्य दैनिक 4PM **विशेष साक्षात्कार**

क्या भाजपा के कुछ विधायक आपके संपर्क में हैं?

मेरे संपर्क में कोई बीजेपी के विधायक नहीं हैं। लेकिन सभी विधायक दुखी हैं बीजेपी से।

आपकी पार्टी के लिए हमेशा कहा गया कि ये पिछड़ों और मुसलमानों की पार्टी है। लेकिन अब आपका हृदय अचानक ब्राह्मणों की तरफ क्यों झुकने लगा? माता प्रसाद पांडेय की ताजपोशी, क्या ब्राह्मणों को रिझाने की ये नई रणनीति है?

पीडीए में ब्राह्मण भी थे। ब्राह्मण ये समझ नहीं पाए। जब मुझसे पीडीए को लेकर सवाल किया गया तो मैंने कहा था कि पीडीए एक बड़ा नारा है। इसमें सबको साथ लेकर सबके साथ जुड़ने की बात है। बीजेपी के सबका साथ सबका विकास में बहुत से लोग उनके साथ नहीं हैं। कभी उनका सम्मान नहीं किया उन्होंने। लेकिन पीडीए मतलब सबको साथ जोड़ने का हमारा एक गठबंधन था। ए से अगड़ा था, आदिवासी था, आधी आबादी था, अल्पसंख्यक था, सब थे इसके अंदर। 69 हजार बच्चों का जो फैसला हाईकोर्ट से आया, उसके जिम्मेदार खुद मुख्यमंत्री हैं। इतने साल उन बच्चों को लड़ना पड़ा, संघर्ष करना पड़ा। ये झगड़ा बीजेपी ने लगाया। बीजेपी की रणनीति है सबको बांटने की। ये उनकी रणनीति का हिस्सा था उन्होंने पिछड़ों और दलितों का आरक्षण छीना। लेटरल एंट्री का भी मतलब है कि आपका आरक्षण खत्म कर देना। आपको ऊपर आरक्षण देंगे नहीं कुछ, नीचे आरक्षण देंगे नहीं, सब आउटसोर्स कर देंगे। तो पीडीए जाएगा कहां? इसका जवाब बीजेपी के पास नहीं है, इसीलिए बीजेपी हारी। इसीलिए यहां एम-वाई हारे।

आपको लगता है यूपी सरकार अपना कार्यकाल पूरा कर पाएगी? मुख्यमंत्री आराम से कार्यकाल पूरा कर पाएंगे? क्योंकि झगड़ा लगाने की आपने भी कम कोशिश नहीं की। आपने भी सोचा योगी के हटने से ठाकुर आपकी तरफ आ जाएगा और अगर नहीं हटे तो ब्राह्मण आपके पास आएगा। राजनीति आपने भी की। आपको क्या लगता है योगी हटाए जाएंगे या कार्यकाल पूरा कर लेंगे?

मैं उस बारे में कुछ नहीं सोच रहा कि हटाए जाएंगे, या खुद हट जाएंगे या कोई उन्हें रिप्लेस कर देगा। मेरा सिर्फ ये मानना है कि उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है, ये खुशहाली के रास्ते पर जाए। उसके लिए हम लोग तैयारी कर रहे हैं कि आने वाले समय में समाजवादियों की सरकार कैसे बनेगी। किस तरह से किसान तरक्की करे, युवाओं के हाथ में नौकरी आए और प्रदेश में खुशहाली आए, इस बारे में हम लोग सोच रहे हैं।

लोगों में एक दर्द है कि नेता जाति और धर्म के नाम पर राजनीति करते हैं और लोगों को बांटते हैं। विकास से पहले जाति-धर्म का बंटवारा आ जाता है। आप पढ़े-लिखे हैं आपके सपने अलग थे। लेकिन अब आपको भी राजनीति उसी लाइन में करनी पड़ रही है?

ये केवल समाजवादियों पर आरोप लगता आया है। लेकिन सच्चाई ये है कि भाजपा से बड़ी कोई जातिवादी पार्टी नहीं है। हमारी किसी योजना में किसी विकास कार्य में आपको भेदभाव नहीं दिखेगा। लेकिन फिर भी हम पर जातिवादी होने के आरोप लगते रहे। जो लोग हम पर आरोप लगाते थे आज वो चुप बैठे हैं। आप देख लीजिए मुख्यमंत्री से लेकर नीचे तक जो लोग बैठे हैं वो कौन हैं और कितना अन्याय हो रहा है। उत्तर प्रदेश में जितनी लूट आज मची है, उतनी कभी नहीं मची। सुल्तानपुर में एक इंजीनियर को उसके घर में घुसकर मार दिया गया। क्या ये भ्रष्टाचार नहीं है? लेकिन सरकार इसके बारे में बोलना भी नहीं चाहती। दुर्भाग्य ये है कि सरकार के अलावा मीडिया हाउस भी इन मुद्दों को नहीं उठाते, इस पर खबर नहीं बनाते। क्योंकि अगर वो दिखाएंगे तो उनका बजट काट दिया जाएगा। ये दुर्भाग्य है। कितनी बेटियां-महिलाएं, किसान मुख्यमंत्री के आवास पर न्याय मांगने आए और निराश होकर कितनों ने आत्मदाह किया। इसका जवाब नहीं देती सरकार। कौन है इसका जिम्मेदार ?

> नेता लोग इमोशनल कार्ड बहुत खेलते हैं, आप ने भी खेला कि आपके घर खाली करने के बाद उसे धुलवाया गया। जबकि आप पूजा-पाठ करते हैं। लेकिन इस बात के जरिए आप पिछड़ों को अपनी ओर करना चाहते थे और उसका फायदा उठाना चाहते थे? आपको इसका लाभ मिला भी।

> इस तरह के भेदभाव को खत्म करने का प्रयास किया जाना चाहिए। अगर पहले किसी ने इतनी पुरानी इस सोच को बदलने का प्रयास किया होता तो हालात कुछ अलग होते। इस पीढ़ी में जो सत्ता में लोग हैं उनका व्यवहार ऐसा नहीं होना चाहिए था। मैंने इन बातों को उतना नहीं उठाया है। लेकिन भाजपा को किसी के साथ ऐसा नहीं करना चाहिए। ये भाजपा बताए कि उन्होंने क्यों गंगाजल से धुलवाया मुख्यमंत्री आवास, क्यों धुलवाया मंदिर? इसका जवाब मैं नहीं दूंगा, इसका जवाब जनता देगी क्योंकि जनता जानती है उन्होंने ऐसा क्यों किया।

कभी आपकी करीबी होती थीं मायावती, अब आपने उनको जीरो पर ला दिया। कैसा लगता होगा उन्हें ?

मैंने नहीं लाया उन्हें जीरो पर। उनके अपने फैसले उन्हें जीरो पर ले आए। वो और जितना करीब बीजेपी के जाएंगी, उतना और जीरो पर जाएंगी।

37 सीटें जीतने के बाद ये आपका हाई कॉन्फिडेंस है?

नहीं, ये हाई कॉन्फिडेंस नहीं है और न ही ओवर कॉन्फिडेंस में हम हैं। वहां समाजवादियों की पहले से सीटें हैं। अलीगढ़ इसलिए हारेंगे क्योंकि अलीगढ़ के सांसद के साथ-साथ वहां की पूरी जनता जानती है कि वो जीते हुए सांसद थे उन्हें बेईमानी से चुनाव हरा दिया गया। बाकी कई सीटें हैं जो समाजवादी की सिटिंग रही हैं। सपा का संगठन अच्छा है। हमारा समीकरण बहुत अच्छा है। इसलिए इंडिया गठबंधन भाजपा को इस बार शून्य कर देगा।

लोकसभा चुनाव और नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद राहुल गांधी के व्यवहार में आप अंतर देखते हैं?

स्वाभाविक है, क्योंकि पद पाने के बाद बहुत सी चीजें अपने आप आ जाती हैं। सौभाग्य से बहुत सी चीजों को वो डील कर रहे हैं और आगे करेंगे भी।

मुझे याद है कि जब आपकी सरकार में कोई घटना होती थी तो मीडिया में आपकी बड़ी सी फोटो उस घटना पर चलती थी। लेकिन अब इतनी बड़ी-बड़ी घटनाएं हो जाती हैं, पर मुख्यमंत्री की फोटो कहीं नहीं दिखती। आपको क्या लगता है मीडिया को मुख्यमंत्री जी से इतना प्यार क्यों है? और आपके साथ ऐसा क्यों होता था?

(अखिलेश ने तंज कसते हुए कहा) ये सब सीखने की बातें हैं। तब हम लोग सीखे नहीं थे, अब सीख गए हैं। कुछ बीजेपी से भी सीखना चाहिए। कुछ बीएसपी से भी सीखना चाहिए। बस सीखते रहना चाहिए।

आप जब मुख्यमंत्री थे तो मैं आपके खिलाफ बहुत तीखा लिखता था, कड़ा लिखता था। उस समय आपके मन में क्या आता था? गुस्सा आती थी?

न केवल आप बल्कि कई पत्रकार ऐसा करते थे। लेकिन मैंने कभी कुछ नहीं कहा। क्योंकि एक बार एक पत्रकार ने मेरा इंटरव्यू लिया और इंटरव्यू रिकॉर्ड करके रख लिया। मैंने पूछा ये कब आएगा तो उसने मुझे बता दिया कि फला तारीख में फला समय आएगा। लेकिन वो इंटरव्यू नहीं आया। तो मैंने उससे पूछा कि हमारा इंटरव्यू क्यों नहीं आया? तो वो बोला कि हमारे सेल्स और मार्केटिंग डिपार्टमेंट ने मना कर दिया था। तो मैं उस बात को अब समझ रहा हूं।

वर्तमान समय में जो मीडिया का स्वरूप है और बड़े-बड़े औद्योगिक घराने मीडिया क्षेत्र में आ रहे हैं। वो हिंसा के बड़े-बड़े थंब बनाकर समाज में नफरत फैला रहे हैं। समाज में जहर घोलने में भी मीडिया की अहम भूमिका है। ऐसे में जो बौद्धिक रूप से समृद्ध लीडरशिप है उसे इस क्षेत्र में काम करना चाहिए, ताकि मीडिया हिंसा का सहारा न ले? इस बात पर विचार करना चाहिए ?

मीडिया की खबर सरकार की सूचना होनी चाहिए और सूचना पर रिएक्ट होना चाहिए। लेकिन अब जो सरकारें हैं वो खबर को दबा देती हैं। किस पर बहस होनी है ये टॉपिक व्हाट्सएप पर आता है। ये टॉपिक वहां से आता है जहां से फंड आता है।

आज का दौर सोशल मीडिया का दौर है। आप जब लोगों से मिलते हैं तो मुस्कुराकर मिलते हैं। लेकिन जब आप टीवी चैनलों पर इंटरव्यू के लिए जाते हैं तो आपके तेवर काफी तीखे रहते हैं। कई एंकर्स पर आप गुस्सा हो जाते हैं। इतना गुस्सा क्यों आता है आपको ?

इंटरव्यू में गुस्सा आना भी बहुत जरूरी है। उससे कुछ रिजल्ट मिलता है। आप ईमानदार पत्रकार हैं मैं आपको ईमानदार कहूं। लेकिन अब अगर बेईमान से बेईमान कह दूं तो वो गुस्सा हो जाए तो क्या करूं मैं। उसे ईमानदार कह दूं क्या? जो सच्चाई दिखाएगा जनता उसे स्वीकार करेगी। फिर वो चाहे यूट्यूब हो, या टीवी चैनल हो या अखबार हो। आप सच्चाई के साथ आएंगे तब आपकी विश्वसनीयता बनेगी। मुझे लगता है बहुत से चैनलों में अब सुधार आने लगा है।

ये जो रिजल्ट आए हैं उसके बाद मोदी जी की पर्सनालिटी टीवी चैनल पर दिखाई देती है, वो अच्छी हुई है या गड़बड़ा गई है?

उस पर मैं कुछ भी नहीं कहूंगा। वो प्रधानमंत्री हैं। जब हटेंगे तब उस पर चर्चा करेंगे।

योगी जी की कोई बात आपको अच्छी लगती है?

नहीं, मुझे कोई बात अच्छी नहीं लगती।

केशव प्रसाद मौर्य में कुछ न कुछ तो अच्छा होगा?

ये तो योगी जी से पूछना पड़ेगा। उनसे पूछूंगा तब बताउंगा उनमें अच्छा क्या है।

राहुल गांधी और प्रियंका गांधी में से ज्यादा अच्छा कौन है? आपकी किससे ज्यादा अच्छे से पटती है?

दोनों बहुत अच्छे हैं। मेरी दोनों (राहुल और प्रियंका) से अच्छी बनती है।

आपका देश का सबसे आइडियल नेता कौन है?

(अखिलेश मुस्कुराते हुए) आइडियल नेता देखना होगा तो मैं शीशे में जाकर खुद को देखूंगा, आपको क्यों बताउंगा।

आपकी हाजिर जवाबी संसद में अनुराग ठाकुर पर गुस्सा होते समय दिखी थी जब उन्होंने राहुल गांधी की जाति पूछ ली थी। आप राहुल गांधी के लिए खड़े हुए और बोले कि जाति कैसे पूछ ली। आप राहुल गांधी के इतने पक्के दोस्त बन गए हैं?

बीजेपी को किसी भी नेता की इस तरह से जाति नहीं पूछनी चाहिए। कम से कम नेता प्रतिपक्ष के बारे में तो ऐसा व्यवहार उनका (बीजेपी) नहीं होना चाहिए। (अनुराग ठाकुर पर इशारों में तंज कसते हुए अखिलेश ने कहा) अगर मंत्री ही बनना है तो चमचागिरी का कोई दूसरा तरीका अपना लो।

इससे पहले आप एक के बाद एक चुनाव हार रहे थे, पार्टी की स्थिति दिन पर दिन कमजोर होती जा रही थी। आपके नेतृत्व क्षमता पर सवाल उठने लगे थे। उस वक्त आपकी मनः स्थिति क्या थी? क्या आप निराश हो गए थे ?

राजनीति में मेरे जैसा व्यक्ति कभी निराश नहीं हो सकता। निराशा उनसे पूछिए जो 10 साल के बाद हारे हैं। जो हार स्वीकार करना जानता हो उसे हार से कोई फर्क नहीं पड़ता। जो पहली बार हारे हैं उनके चेहरे बता रहे हैं कैसा बुरा हारे हैं वो।

युवा पीढ़ी जो धर्म और जाति के दलदल से इतर विकास की बात करता है। अगर वो धर्म और राजनीति के दल-दल से अलग हो गया तो जो लोग धर्म की बात करते हैं और इस पर राजनीति करते हैं, उनके पास अगला मुद्दा क्या बचेगा?

नई पीढ़ी के अपने सपने होते हैं। ये नई पीढ़ी अपने हिसाब से चलती है। हमारी आपकी जिम्मेदारी यही बनती है कि हमारी अगली पीढ़ी को हम कुछ अच्छा देकर जाएं। जो कुछ विकास हम कर सकें वो करें। नई पीढ़ी को अच्छा रास्ता देकर जाएं, ये ही हम लोगों का सपना होना चाहिए ये ही संकल्प होना चाहिए।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

आखिर क्यों बढ़ रही स्कूली छात्रों में हिंसक प्रवृति!

“ समाजविज्ञानी यह मानते हैं कि मोबाइल पर पबजी जैसे खतरनाक गेम और वेब सीरीज बच्चों को हिंसक बना रही है। इसतरह की घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत है। नीति नियंताओं को इसपर विचार करना जरूरी है कि इस तरह की घटनाएं अब आगे न हों। भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति चिन्ताजनक है। पिछले कुछ समय से स्कूली बच्चों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी एवं खौफनाक है।

क्या भारत क्या दुनिया के अन्य देश हर जगह से किशोरों या स्कूली छात्रों द्वारा एक दूसरे पर जरा जरा सी बात पर नाराज होकर हिंसा पर उतारू हो जाने की खबरें आना आम हैं। अभी उदयपुर में मामूली सी बात पर एक स्कूली बच्चे ने अपने मित्र पर चाकू से हमला कर दिया जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई। इस तरह की बढ़ती घटनाओं पर समाज में चर्चा होने लगी है कि आखिर स्कूली बच्चों में पिछले कुछ समय से हिंसक प्रवृत्ति तेजी से क्यों बढ़ रही है, जो समाज के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं है। समाजविज्ञानी यह मानते हैं कि मोबाइल पर पबजी जैसे खतरनाक गेम और वेब सीरीज बच्चों को हिंसक बना रही है। इसतरह की घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत है। नीति नियंताओं को इसपर विचार करना जरूरी है कि इस तरह की घटनाएं अब आगे न हों। भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति चिन्ताजनक है। पिछले कुछ समय से स्कूली बच्चों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी एवं खौफनाक है।

चिंता का बड़ा कारण इसलिए भी है क्योंकि जिस उम्र में बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है, उसी उम्र में कई बच्चों में आक्रामकता घर करने लगी है और उनका व्यवहार हिंसक होता जा रहा है। जिस उम्र में बच्चों को पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद में व्यस्त रहना चाहिए, उसमें उनमें बढ़ती आक्रामकता, हिंसा एवं क्रूरता एक अस्वाभाविक और परेशान करने वाली बात है। कई घटनाओं में स्कूल में पढ़ने वाले किसी बच्चे ने अपने सहपाठी पर चाकू या किसी घातक हथियार से हमला कर दिया और उसकी जान ले ली। अमेरिका की तर्ज पर भारत के बच्चों में हिंसक मानसिकता का पनपना हमारी शिक्षा, पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना पर कई सवाल खड़े करती है। यह दुष्प्रवृत्ति बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर तो नकारात्मक प्रभाव डाल ही रही है, इसे भविष्य में समाज की शांति के लिए बड़ा खतरा भी मानना चाहिए। बड़ा सवाल है कि जिन वजहों से बच्चों के भीतर आक्रामकता एवं हिंसा पैदा हो रही है, उससे निपटने के लिए क्या किया जा रहा है! पाठ्यक्रमों का स्वरूप, पढ़ाई-लिखाई के तौर-तरीके, बच्चों के साथ घर से लेकर स्कूलों में हो रहा व्यवहार, उनकी रोजमर्रा की गतिविधियों का दायरा, संगति, सोशल मीडिया या टीवी से लेकर उसकी सोच-समझ को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों से तैयार होने वाली उनकी मन:स्थितियों के बारे में सरकार, समाजकर्मी एवं अभिभावक क्या समाधान खोज रहे हैं। सभी स्तरों पर विचार करना आवश्यक है। सरकारों के साथ समाज व परिवारों को भी सजग होना होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कड़े कानून नहीं, सोच बदलने से थमेगी यौन हिंसा

विश्वनाथ सचदेव

कोलकाता के एक अस्पताल में हुए जघन्य कांड की गुत्थी अभी सुलझी नहीं है। पश्चिम बंगाल की पुलिस को अक्षम ठहराकर मामला सीबीआई को सौंप दिया गया है। उच्चतम न्यायालय ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए स्वत: संज्ञान लिया है। उधर देशभर के डॉक्टरों का विरोध-प्रदर्शन जारी है। वे सुरक्षा की गारंटी मांग रहे हैं। इस मांग के औचित्य पर किसी को संदेह नहीं होना चाहिए, लेकिन जिस तरह सारे मामले को राजनीति का हथियार बनाया जा रहा है उसे देखते हुए न्याय की मांग करने वालों के इरादे पर संदेह व्यक्त किया जा रहा है। निस्संदेह मामला बहुत गंभीर है और बलात्कार का यह मुद्दा कानून-व्यवस्था के लिए जिम्मेदार एजेंसियों की अक्षमता को भी उजागर करने वाला है। उम्मीद ही की जा सकती है कि अपराधी शीघ्र ही पकड़े जाएंगे और मरीजों को अस्पतालों में समुचित चिकित्सा मिलेगी, डॉक्टर को बिना डरे अपना काम करने का माहौल मिलेगा।

मरीजों और डॉक्टरों के प्रति हमारी व्यवस्था को कम से कम इतना तो करना ही चाहिए। इस मामले में न्याय मांगने वाले अपराधी या अपराधियों को कड़े से कड़ा दंड, फांसी, दिये जाने की मांग कर रहे हैं। निश्चित रूप से अपराधी को ऐसा दंड मिलना ही चाहिए जो शेष समाज को यह चेतावनी देने वाला हो कि किसी भी सभ्य समाज में ऐसी नृशंसता को स्वीकार नहीं किया जा सकता। लेकिन यहां इस बात को भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि कड़ी से कड़ी सजा का एक परिणाम यह भी निकल रहा है कि अपराधी सबूत को मिटाने के चक्कर में बलात्कार के बाद हत्या का मार्ग अपना रहे हैं। दिल्ली की 'निर्भया' से लेकर कोलकाता की 'निर्भया' तक की यह शृंखला यही बता रही है कि मनुष्यता के खिलाफ किए जाने वाले इस अपराध- बलात्कार के दोषी सिर्फ कड़े कानूनों से नहीं डर रहे हैं। जिस दिन कोलकाता के एक अस्पताल में यह जघन्य कांड हुआ, उसके बाद उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड जैसे देश के अन्य हिस्सों में भी बलात्कार-हत्या की घटनाएं सामने आने लगीं।

यह स्थिति निश्चित रूप से भयावह है। स्पष्ट दिख रहा है कि अपराधियों को कानून-व्यवस्था का डर नहीं रहा, कहीं न कहीं उन्हें लग रहा है कि कानून उनकी मनमानी को रोकने में सक्षम नहीं है। स्थिति की गंभीरता और भयावहता को कुछ आंकड़े उजागर कर सकते हैं।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) की गणना के अनुसार हमारे देश में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में बलात्कार चौथा सबसे गंभीर अपराध है। प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2021 में देश में बलात्कार के 31,677 मामले दर्ज हुए थे, अर्थात रोज 86 मामले यानी हर घंटे चार। ज्ञातव्य है कि इसके पहले के दो वर्षों में यह संख्या कम थी- सन 2020 में 28,046 मामले और सन 2019 में 32,033 मामले। यह आंकड़े तो उन अपराधों के हैं, जो थानों में दर्ज हुए। हकीकत यह है कि आज हमारे देश में कम से कम इतने ही मामले थानों में दर्ज नहीं होते! यह मानकर कि अपराधियों को सजा नहीं मिलेगी, पीड़ित पक्ष 'पुलिस के चक्कर' में पड़ते ही नहीं। साथ ही बलात्कार की शिकार महिलाएं और उनके परिवार वाले समाज के 'डर' से भी पुलिस के पास जाने में हिचकिचाते हैं। बलात्कार स्त्री पर किया गया जघन्य अपराध है, लेकिन हमारे यहां बलात्कार की शिकार महिलाओं को ही संदेह और नीची दृष्टि से देखा जाता है! आज मुख्य सवाल इस दृष्टि के बदलने का है। और यह काम सिर्फ कड़े कानून से नहीं होगा। बलात्कार करने वाले को कड़ी से कड़ी सजा मिले, यह सब चाहते हैं, लेकिन यह बात कोई नहीं समझना चाहता कि आवश्यकता उस दृष्टि को बदलने की है जो महिला को एक वस्तु मात्र समझती है। अपराधी यह दृष्टि भी है। सजा इसे भी मिलनी चाहिए- इस दृष्टि को बदलने की ईमानदार कोशिश होनी चाहिए। आज जीवन के हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से कहीं आगे हैं वे। इसके बावजूद उन्हें कमजोर समझा-कहा जाता है। यह उसी सोच का परिणाम है जो अबला जीवन को 'आंचल में दूध और पलकों में पानी' से आगे नहीं देखना चाहता। इस सोच को बदलने की जरूरत है।

नारी को पुरुष के सहारे की नहीं, बराबरी के सहयोग की आवश्यकता है और पुरुष को यह समझना होगा कि वह भी नारी के सहयोग के बिना अधूरा है। जितनी आवश्यकता नारी को पुरुष की है, उतनी ही आवश्यकता पुरुष को भी नारी की है। यह काम कानून को कड़ा बनाने से नहीं, समाज की सोच को बदलने से होगा। हम देख रहे हैं कि इस संदर्भ में कानून को कड़ा बनाना अपराध और अधिक जघन्य बना रहा है, उम्मीद करनी चाहिए कि कानून अपना काम करेगा और समाज की सोच भी बदलेगी। इस दिशा में बहुत कुछ किये जाने की आवश्यकता है।

निर्यात और निवेश के समक्ष नई चुनौतियां

जयंतीलाल भंडारी

कहा गया है कि इस समय वैश्विक परिदृश्य विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक अनिश्चितताओं से प्रभावित होने के कारण भारत के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। निस्संदेह, इन दिनों बांग्लादेश के राजनीतिक संकट, भयावह होते रूस-युक्रेन युद्ध, इस्त्राइल-ईरान संघर्ष और अमेरिका व जापान सहित दुनिया के कई देशों में मंदी की लहर के कारण भारत से निर्यात की रफ्तार और भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की चुनौतियां बढ़ गई हैं।

हालिया आंकड़ों के अनुसार भारत से वस्तुओं का निर्यात जुलाई 2024 में सालाना आधार पर 1.2 प्रतिशत घटकर 33.98 अरब डॉलर रहा। पिछले साल इसी महीने में निर्यात का मूल्य 34.39 अरब डॉलर था। जहां इस समय भारतीय निर्यातक बांग्लादेश के सियासी हालात को लेकर चिंतित हैं, वहीं वे चीन को किए जा रहे निर्यात में कमी से भी चिंतित हैं। साथ ही निर्यातकों को विदेशी बाजारों में कमजोर मांग और व्यापार में अन्य बाधाओं से जूझना पड़ रहा है। पिछले दिनों भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एग्जिम बैंक) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत के वस्तु निर्यात में वृद्धि जुलाई से सितंबर 2024 की तिमाही में घटकर 4 फीसदी रह सकती है। कहा गया है कि इस समय वैश्विक परिदृश्य विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक अनिश्चितताओं से प्रभावित होने के कारण भारत के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

निस्संदेह, इन दिनों बांग्लादेश के राजनीतिक संकट, भयावह होते रूस-युक्रेन युद्ध, इस्त्राइल-ईरान संघर्ष और अमेरिका व जापान सहित दुनिया के कई देशों में मंदी की लहर के कारण भारत से निर्यात की रफ्तार और भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की चुनौतियां बढ़ गई हैं। एक अगस्त से सरकार ने चीन सहित सीमावर्ती देशों से भारत में विनिर्माण परियोजनाओं से जुड़े टेक्नीशियनों के लिए नई वीजा व्यवस्था लागू कर दी है। वर्ष 2024-25 के आम बजट में भी इस परिप्रेक्ष्य में कारगर रणनीतियां दिखाई दे रही हैं। साथ ही वाणिज्य विभाग निर्यात प्रोत्साहन की दो महत्वपूर्ण योजनाओं को उनकी समाप्ति तिथि से आगे बढ़ने पर जोर दे रहा है। उल्लेखनीय है कि राजनीतिक अस्थिरता से भारत-बांग्लादेश व्यापार पर नया संकट खड़ा हो गया है। दक्षिण एशिया में बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है तथा बांग्लादेश भारत का 8वां सबसे बड़ा निर्यात बाजार भी है। पिछले वर्ष 2023-24 में भारत ने बांग्लादेश को 11 अरब डॉलर मूल्य का निर्यात किया है।

चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से जून, 2024 की पहली तिमाही में जहां निर्यात धीमी रफ्तार से बढ़े हैं, वहीं आयात की रफ्तार अधिक रहने से विदेश व्यापार घाटे में वृद्धि हुई है। इन तीन महीनों में कुल निर्यात 200.33 अरब डॉलर मूल्य के रहे हैं, जिसमें वस्तु निर्यात 109.96 अरब डॉलर और सेवा निर्यात 90.37 अरब डॉलर मूल्य के हैं। जबकि कुल आयात 222.90 अरब डॉलर मूल्य के हैं। जिसमें वस्तु आयात 172.23 अरब डॉलर और सेवा आयात 50.67 अरब डॉलर मूल्य के हैं। चूंकि इस वित्त वर्ष में भारत द्वारा कुल निर्यात का लक्ष्य पिछले वर्ष के कुल 776 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात से भी कुछ अधिक 800 अरब डॉलर की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचाना सुनिश्चित किया गया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि वैश्विक सुस्ती व बड़े देशों के बीच युद्ध की तनातनी से देश के एफडीआई परिदृश्य पर भी चुनौतियां बढ़ी हैं।

भारत में एफडीआई का प्रवाह 2023-24 में 3.49 प्रतिशत घटकर 44.42 अरब डॉलर रह गया। इसका कारण सेवा, कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, दूरसंचार, ऑटो और फार्मा जैसे क्षेत्रों में निवेश का कम रहना है। 2022-23 के दौरान एफडीआई का प्रवाह 46.03 अरब डॉलर था। पिछले वर्ष कुल एफडीआई जिसमें इक्विटी प्रवाह, पुनर्निवेशित आय और अन्य पूंजी शामिल हैं- एक प्रतिशत घटकर 70.95 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2022-23 में यह 71.35 अरब अमेरिकी डॉलर था। एक, वर्ष 2024-25 के बजट के तहत निर्यात बढ़ाने और एफडीआई आकर्षित करने के लिए सुनिश्चित किए गए अभूतपूर्व बजट आवंटनों का शुरुआत से ही कारगर उपयोग किया जाए। दो, सेवा निर्यात को हरसंभव तरीके से बढ़ाया जाए और सेवा क्षेत्र में एफडीआई आकर्षित की जाए। तीन, निर्यातकों को शुल्क के अलावा आने वाली बाधाओं (नॉन-टैरिफ बैरियर) से राहत दी जाए तथा एफडीआई की प्रक्रिया को और सरल बनाया जाए तथा चार, नए संभावित निर्यात बाजार तलाशे जाएं और एफडीआई के नए वैश्विक निवेशक खोजे जाएं।

इसमें कोई दोमत नहीं है कि एक अगस्त से लागू की गई व्यापार वीजा की नई व्यवस्था निर्यात व निवेश बढ़ाने में लाभप्रद होगी। 8वर्ष 2024-25 के बजट में वित्तमंत्री ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) को निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर सशक्त बनाया है। साथ ही इस सेक्टर के आयात में कमी के मद्देनजर प्रावधान किए गए हैं। नए बजट से सरकार ने जरूरी इकोसिस्टम को तैयार कर ठंडे पड़े मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में जान फूंकने और प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम को मजबूती देने के प्रावधान किए हैं। नए बजट में मशीनरी की खरीदारी के लिए क्रेडट गारंटी स्कीम लांच की गई है। इस स्कीम के तहत सेल्फ फाइनेंसिंग गारंटी फंड बनाया जाएगा जिसके तहत 100 करोड़ रुपए तक के लोन की गारंटी होगी। वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में कुछ वस्तुओं पर सीमा शुल्क में छूट दी गई है और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) के इस्तेमाल से जुड़े नियम सरल बनाए गए हैं, जो व्यापार नीति के लिहाज से सकारात्मक उपाय हैं।

मनरेगा को कमजोर कर रही मोदी सरकार : राहुल गांधी

» नेता प्रतिपक्ष ने कहा- यह योजना सामाजिक न्याय के प्रति कांग्रेस की प्रतिबद्धता है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने केंद्र की एनडीए सरकार पर जमकर हमला बोला है। कांग्रेस नेता व रायबरेली के सांसद ने मोदी सरकार पर मनरेगा को कमजोर करने का आरोप लगाया और कहा कि सरकार द्वारा इस योजना की क्षमता का समर्थन करने में विफलता के बावजूद, यह सामाजिक न्याय के प्रति कांग्रेस की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने याद किया कि 2005 में इसी दिन, कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) लागू किया था और भारत के विकास के लिए एक समान और समावेशी दृष्टिकोण की कल्पना की थी। गांधी ने एक फेसबुक पोस्ट में कहा,हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट, सरल और एकतरफा था हमारे समाज के सबसे गरीब वर्गों का उत्थान करना और उन्हें सम्मान का जीवन प्रदान करना। उन्होंने कहा, हमने माना कि गरीबी और बेरोजगारी विकास में महत्वपूर्ण बाधाएं हैं और इन मुद्दों को सीधे संबोधित करने के लिए मनरेगा की अवधारणा बनाई गई थी। यह लोगों को सम्मानजनक बुनियादी न्यूनतम आय की गारंटी देकर उन्हें सशक्त बनाने का एक क्रांतिकारी कदम था। गांधी ने कहा कि उसके बाद के वर्षों में, मनरेगा भारत की ताकत का एक शानदार उदाहरण बन गया है, जिसने 2005-06 और 2015-16 के बीच 27 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला, लाखों लोगों को रोजगार दिया और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे को बदल दिया।

बजटीय आवंटन को 10 साल के निचले स्तर पर घटा

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा कार्यक्रम की लगातार आलोचना के बावजूद, वे अब इस पर भरोसा करते हैं जबकि साथ ही इसे कमजोर भी कर रहे हैं। बजटीय आवंटन को 10 साल के निचले स्तर पर घटा दिया गया है, आधार और तकनीक की आड़ में 7 करोड़ से अधिक श्रमिकों के जॉब कार्ड हटा दिए गए हैं, राज्यों को भुगतान में देरी हुई है और मजदूरी को बेहद कम स्तर पर रखा गया है, कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया। उन्होंने कहा,इस दूरदर्शी योजना की क्षमता को समझने या उसका समर्थन करने में सरकार की विफलता के बावजूद, मनरेगा सामाजिक न्याय और हाशिए पर पड़े लोगों के सशक्तिकरण के लिए हमारी निरंतर प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है। गांधी ने कहा, मनरेगा जैसे जन-केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से हम वास्तव में एक ऐसे भारत के सपने को पूरा कर सकते हैं जो मजबूत, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर हो और दुनिया के देशों में सबसे आगे हो।

राधा कृष्ण की वेषभूषा में बच्चों ने मोहा मन

» नगर निगम चिल्ड्रेन पैलेस म्युनिसिपल नर्सरी ने मनाई कृष्ण जन्माष्टमी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम चिल्ड्रेन पैलेस म्युनिसिपल नर्सरी स्कूल नगर निगम लखनऊ में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया, इस अवसर पर छोटे छोटे बच्चों द्वारा राधा कृष्ण की वेषभूषा में बहुत ही मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अपर नगर आयुक्त अरूण कुमार गुप्त उपस्थित हुए जिनके द्वारा आन्या गोयल नर्सरी-बी एवं रिशिका गुप्ता केजी-बी को नृत्य प्रस्तुति पर पांच-पांच सौ रुपए नकद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया गया एवं स्कूल के छात्र छात्राओं को चाकलेट वितरित किया। इस अवसर पर अपर नगर आयुक्त महोदय ने स्कूल में पौधारोपण भी किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या सविता सिंह द्वारा अपर नगर आयुक्त महोदय को धन्यवाद व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

सरकारी कार्यालय के इस्तेमाल पर भड़के बीजेपी पार्षद दल के नेता

» नगर आयुक्त को पत्र लिखकर की कार्रवाई की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। रामकी कंपनी को सफाई का काम देने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। एक तरफ जहां त्रिवेणी नगर वार्ड से पार्षद मुन्ना मिश्रा की अगुआई में 56 पार्षदों को लामबंद कर विरोध का दावा किया जा रहा है। तो दूसरी तरफ बीजेपी पार्षद दल के नेता सुशील तिवारी पम्मी ने बैठक पर ही सवाल उठा दिया है। वहीं रामकी कंपनी को सफाई का काम देने के विरोध में हुई बैठक को सुशील तिवारी ने अवैध घोषित कर दिया है।

कहा कि बैठक बगैर उनकी सूचना के बुलाना पूरी तरह असंवैधानिक है। उन्होंने आरोप लगाया कि नगर निगम मुख्यालय के कमेटी हॉल में हुई बैठक में पार्षद से ज्यादा उनके रिश्तेदार शामिल थे। ऐसे में यह पूरी तरह से शासन के उस पत्र का उल्लंघन है। जिसमें कहा गया है कि नगर निकाय कार्यालयों

में किसी भी तरह किसी बैठक में पार्षद पति, पार्षद पुत्र, पार्षद देवर और पार्षद का कोई रिश्तेदार शामिल नहीं हो सकता है। ऐसा करते पाए जाने पर नगर आयुक्त उस संबंधित पार्षद को अनुशासनहीनता के आरोप में सदन से निलंबित करने की रिपोर्ट मेयर और शासन को भेज सकते हैं। सुशील तिवारी ने नगर आयुक्त को पत्र लिखकर इस पूरे प्रकरण की जांच कराकर बैठक में बाहरी व्यक्तियों के शामिल होने पर कार्रवाई की मांग की है।

राजस्थान भाजपा में सतह पर आई गुटबाजी!

» बीजेपी की बैठक बीच में छोड़कर चले गए राजेंद्र राठौड़, भड़के प्रदेश प्रभारी राधामोहन

» कुछ लोग मेरे और भाजपा संगठन के प्रति भ्रम फैला रहे : राठौड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान बीजेपी के अंदर की गुटबाजी अब सतह पर आने लगी है। दरअसल मंगलवार को जयपुर में बीजेपी सदस्यता अभियान की बैठक हुई। इस दौरान राजेंद्र राठौड़ बीच में ही चले गए। जिससे प्रदेश प्रभारी राधा मोहनदास अग्रवाल ने रिपोर्ट मांगी है। इससे राजनीति गरमा गई है। इसी बहाने उनकी हाजिरी भी लग गयी।

उधर कांग्रेस ने भी भाजपा पर तंज कसने में देरी नहीं लगाई। क्योंकि बैठक में प्रदेश प्रभारी राधा मोहन दास ने पूछा- कहां गए राजेंद्र राठौड़? मैं हर किसी पर नजर

रखता हूं। इसी बहाने उनकी हाजिरी भी लग गयी। उनसे पूछा जाना चाहिए कि उन्हें बैठक क्यों छोड़नी पड़ी? कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने इसे राजेंद्र राठौड़ जैसे वरिष्ठ नेता का अपमान बताते हुए बीजेपी पर हमला बोला है। प्रदेश प्रभारी ने कहा- बैठक में 24 मंत्रियों को आना था, जिनमें से 16 ही आए हैं। 14 सांसदों में से 10 सांसद, 115 विधायकों में से 64 विधायक और 44 जिला अध्यक्षों में से 38 आये हैं जो नेता बैठक में नहीं आए उनसे पूछा जाना चाहिए कि वे क्यों नहीं आए। राजेंद्र राठौड़ ने एक्स पर लिखा कि सोशल मीडिया कुछ लोग मेरे और भाजपा संगठन के प्रति भ्रम फैलाकर अनर्गल ट्रेंड चला रहे हैं जिसका मैं विरोध करता हूं। भाजपा नेता ने आगे कहा कि मैंने अपना पूरा राजनीतिक जीवन भाजपा संगठन के लिए समर्पित किया है और भविष्य में भी एक कार्यकर्ता के रुप में संगठन को मजबूती देने के लिए अनवरत कार्यरत रहूंगा।

बड़े नेताओं का अपमान करती है बीजेपी : डोटासरा

राधा मोहन दास के बयान पर डोटासरा ने कहा कि बीजेपी का नया प्रभारी आया है। मैं उनका वीडियो सुन रहा था। वह पूछ रहे थे कि क्या मीटिंग में इतने लोग आये हैं। इतने सारे लोग नहीं आए हैं। बैठक में नेता आ रहे हैं। 6 महीने बाद आप देखेंगे कि ये भी नहीं आएंगे। डोटासरा ने कहा कि बीजेपी के प्रदेश प्रभारी राठौड़ जैसे वरिष्ठ नेता की हाजिरी ले रहे थे। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बोले- आप क्या करना चाहते हैं, क्या कहना चाहते हैं? अरे नेताओं का इतना अपमान मत करो, तुम्हारा टिकट गया भाड़ में, इतना अपमान मत करो। सोशल मीडिया पर भी पूरे घटनाक्रम को लेकर चर्चा हो रही थी।

शिखर धवन ने क्रिकेट को कहा बाय-बाय

» बोले- भारत के लिए खेलने से मिला सुकून

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। शिखर धवन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास का एलान कर दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्सपर घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा। 37 साल के इस खिलाड़ी ने 2010 में भारत के लिए डेब्यू किया था। अपने 13 साल के करियर में वह 34 टेस्ट, 167 वनडे और 68 टी20 मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

संन्यास का एलान करते हुए धवन ने कहा, संन्यास का एलान करते हुए धवन ने कहा कि नमस्कार दोस्तों! आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा हूं, जहां से मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो ढेरों यादें नजर आती हैं और जब आगे देखता हूं तो पूरी दुनिया। मेरी हमेशा से एक ही मंजिल थी इंडिया के खेलना और ऐसा हुआ भी। इसके लिए मैं कई लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा, मेरा परिवार, मेरे बचपन के कोच तारिक सिन्हा, मदन शर्मा, जिनके अंडर मैंने क्रिकेट सीखी। फिर मेरी टीम जिनके साथ मैं वर्षों तक खेला। एक नया परिवार मिला। नाम मिला। साथ मिला। ढेर सारा प्यार मिला। कहते हैं न कि कहानी में आगे बढ़ने के लिए पन्ने पलटने जरूरी है। बस, मैं भी ऐसा करने जा रहा हूं।

2022 में खेला था आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच

धवन ने 10 दिसंबर 2022 को अपना आखिरी अंतरराष्ट्रीय मुकाबला बांग्लादेश के खिलाफ खेला था। वनडे प्रारूप का यह मुकाबला चटगांव में खेला गया था। इस मैच धवन महज तीन रन बना पाए थे। इसी तरह धवन ने अपना आखिरी टी20 मैच कोलंबो में 29 जुलाई 2021 को श्रीलंका में खेला था। इस मैच में वे खाता भी नहीं खोल पाए थे। धवन ने अपना आखिरी टेस्ट सितंबर 2018 में इंग्लैंड के खिलाफ ओवल में खेला था। इस मैच की दोनों पारियों में तीन और एक रन बनाए थे।

मैं अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट से संन्यास का एलान कर रहा हूं। अब जब मैं इस क्रिकेट यात्रा को अलविदा कह रहा हूं कि तो मेरे दिल में एक सुकून है कि मैं लंबे समय तक देश के लिए खेला।

भाजपा नेता के चालक ने नाबालिग से की दरिंदगी!

सपा-कांग्रेस व बसपा ने योगी सरकार को घेरा, बुधवार रात को किशोरी घर से निकली थी, बीजेपी विधायक के परिचित ने किया मुख्य आरोपी का सहयोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

आगरा। आगरा के सदर के ताल फिरोज खां में बुधवार रात को भाजपा के पूर्व महामंत्री प्रेमचंद कुशवाहा के मैरिज होम में 16 वर्षीय दलित किशोरी के साथ दुष्कर्म हुआ। पुलिस ने भाजपा नेता के चालक आरोपी भीमसेन को जेल भेजने के बाद प्रेमचंद कुशवाहा को भी जेल भेज दिया। इस घटना के बाद राज्य की सियासत गरमा गई।

मैरिज होम में हैवानियत
भाजपा नेता व चालक को भेजा जेल, पीड़िता दहशत में

कांग्रेस-सपा समेत पूरे विपक्ष ने योगी सरकार की कानून व्यवस्था पर सवाल उठा दिए हैं। दलित किशोरी के साथ घटना के बाद पूर्व मुख्यमंत्री मायवती ने पोस्ट किया और राज्य सरकार पर हमला बोला। बुधवार रात को किशोरी घर से निकली थी। वह घर के पास दुकान पर गई थी। मगर, वापस नहीं लौटी। परिजन को प्रेमचंद कुशवाहा मैरिज होम में मिले। उन्होंने अंदर किसी के होने से इन्कार किया। मगर, किशोरी मिल गई। इस पर लोग आक्रोशित हो गए। किशोरी ने भाजपा नेता के चालक भीमसेन उर्फ भीमा का नाम लिया। वह मैरिज होम से फरार हो गया था। लोगों ने प्रेमचंद को पकड़ लिया। उन्हें थाना लाकर पुलिस के हवाले कर दिया। लोगों ने आरोपी के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की।

मामले में पुलिस ने भीमा को गिरफ्तार कर जेल भेजा। लोगों के दबाव में प्रेमचंद कुशवाहा को भी शांति भंग में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। उधर, घटना के बाद से पीड़िता दहशत में है। वह घर से बाहर नहीं निकल रही है। परिवार के लोग उसे संभाल रहे हैं।

पॉक्सो एक्ट के लिए कोर्ट में प्रार्थनापत्र

उधर आगे की कार्रवाई के लिए पॉक्सो एक्ट में तलब करने के लिए कोर्ट में प्रार्थनापत्र दिया। इस पर 27 अगस्त की तारीख लगी है। मुकदमे में एससी-एसटी एक्ट की वृद्धि की गई है। अब विवेचना एसीपी सदर डॉ. सुकन्या शर्मा करेंगी। एसीपी सदर डॉ. सुकन्या शर्मा ने बताया कि मुकदमे में एससी-एसटी एक्ट की वृद्धि कर दी गई है। इससे विवेचना वह खुद कर रही हैं। साक्ष्य संकलन किया जा रहा है। पीड़िता का मेडिकल कराया गया। उसने मेडिकल के दौरान चिकित्सक के समक्ष कहा था कि उसके साथ भीमा ने गलत काम किया। उसके कोर्ट में भी बयान दर्ज कराए गए थे। इसका अवलोकन किया गया। पीड़िता ने भीमा को आरोपी बताया।

नेता की सिफारिश में आए कई फोन

भाजपा नेता पर आरोप लगने के बाद पुलिस के पास फोन आने शुरू हो गया। कई बड़े नेताओं ने सिफारिश करना शुरू कर दिया। इससे पुलिस दबाव में आ गई। उसके खिलाफ कार्रवाई का मन नहीं था। मगर, जाटव महापंचायत के ऐलान के बाद शांति भंग में कार्रवाई की गई। एसीपी कोर्ट में पेश किया। जमानत प्रार्थना पत्र प्रस्तुत न करने को आधार बनाते हुए जेल भेज दिया।

परिजन बोले, बेटी को दफनाने की थी तैयारी

परिजन ने आरोप लगाया कि बेटी मैरिज होम से जिंदा बचकर नहीं आता। आरोपी ने गड्ढा खोद लिया था। उसे दफनाने वाला था। पुलिस ने इसके बारे में पता किया। अंदर गड्ढा मिला। हालांकि यह गड्ढा पुराना प्रतीत हो रहा था।

मैरिज होम पर बुलडोजर चलाने की मांग

जाटव महापंचायत भी उग्र हो गई थी। लोग मांग कर रहे थे कि भाजपा नेता के मैरिज होम पर बुलडोजर चलाया जाए। पुलिस को चेतावनी दी कि किसी को बचाने का प्रयास नहीं किया जाए। कई जिलों में आरोपियों पर बुलडोजर चलाया गया है। अब यहां भी ऐसा होना चाहिए। मगर, मांग नहीं मानी जाती है तो सड़क पर उतरकर आंदोलन होगा।

एमवीए नेताओं ने खोला शिंदे सरकार के खिलाफ मोर्चा

- बदलापुर दुष्कर्म मामले पर दिया धरना
- शरद पवार और सुप्रिया सुले ने मुंह पर बांधी काली पट्टी
- कोर्ट ने महाराष्ट्र बंद के फैसले पर लगाई रोक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पुणे। बदलापुर में दो बच्चियों के साथ हुई दुष्कर्म मामले में आज महाविकास अघाड़ी दल के नेता विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार और लोकसभा सांसद सुप्रिया सुले ने पुणे रेलवे स्टेशन पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा के सामने एक घंटे के मौन प्रदर्शन का नेतृत्व किया। दोनों नेताओं ने अपने मुंह पर काली पट्टी बांधकर राज्य में महिलाओं और लड़कियों के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ प्रदर्शन किया।

गौरतलब है कि बदलापुर दुष्कर्म मामले में महाविकास अघाड़ी दल ने आज महाराष्ट्र बंद का एलान किया था। हालांकि, शुक्रवार को बॉम्बे हाई कोर्ट ने आदेश दिया कि महाराष्ट्र बंद के फैसले को रद्द किया जाए। कोर्ट ने कहा था कि बंद होने से आम जन जीवन अस्त-व्यस्त होता है। इसके बाद महा विकास अघाड़ी ने अब शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करने का फैसला लिया है। शिवसेना (यूबीटी) के नेता उद्धव ठाकरे ने अपने पार्टी कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे अपने-अपने शहरों और गांवों के मुख्य चौराहों पर एक घंटे का मौन धारण करें।

राज्य में कानून व्यवस्था नहीं : विजय वडेट्टीवार

राज्य में बिगड़े कानून व्यवस्था पर चिंता जाहिर करते हुए महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वडेट्टीवार ने आज कहा, राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति नहीं है। हम सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं और महिलाओं के खिलाफ हो रही घटनाओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हैं। लोगों के आंदोलन के बावजूद अगर राज्य में ऐसी घटनाएं होती रहती हैं, तो इससे पता चलता है कि राज्य में अपराध पर कोई नियंत्रण नहीं है। अपराधियों में कोई डर नहीं है।

शहर में गंदगी देख भड़क गईं महापौर

जोन तीन में जोनल अधिकारी को लगाई फटकार, हर वार्ड में मिली खामियां

- सुबह ही सफाई व्यवस्था देखने निकलीं मेयर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ की मेयर सुषमा खर्कवाल ने सुबह-सुबह शहर की शहर में सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। मेयर ने लखनऊ विश्वविद्यालय से लेकर अलीगंज इलाका का दौरा किया। इस दौरान उनको हर जगह गंदगी देखने को मिली। मेयर ने इसके बाद जोन तीन के जोनल अधिकारी अलंकार रस्तोगी और जोनल सफाई इंस्पेक्टर को फटकार लगाना शुरू कर दिया।

मेयर ने कहा कि शहर में सफाई व्यवस्था को लेकर किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकार और शासन सफाई को लेकर काफी सख्त है। ऐसे में अगर किसी भी कर्मचारी या अधिकारी की वजह से सफाई की स्थिति गड़बड़ होती है तो उसको स्वीकार नहीं किया जाएगा।

मेयर ने टैक्स इंस्पेक्टर के खिलाफ लिखा पत्र

जोन तीन की महिला टैक्स इंस्पेक्टर का दो साल पहले लड़ाई करते हुए वीडियो वायरल हुआ था, तीन दिन में मेयर ने मांगा जवाब नगर निगम में विवाद कम होने का नाम नहीं ले रहा है। मेयर ने ऐसी ही एक विवादित मामले पर नगर आयुक्त से तीन दिन के अंदर जवाब मांगा है। नगर निगम जोन तीन में तैनान महिला टैक्स इंस्टेक्टर का एक मारपीट करते हुए वीडियो साल 2022 में वायरल हुआ था। उस दौरान वह जोन 6 में तैनात थी। अब उसको लेकर एक बार फिर शिकायतें तेज हुई है। ऐसे में मेयर ने 3 दिन के अंदर इस पूरे मामले पर नगर आयुक्त से जवाब मांगा है। इसके अलावा अन्य कई आरोप भी लगने की बात सामने आ रही है।

निलंबन का आदेश भी हुआ था

बताया जा रहा है कि उस समय तात्कालिक नगर आयुक्त अजय द्विवेदी ने टैक्स इंस्पेक्टर के निलंबन का आदेश भी दिया था। हालांकि उसके दो दिन बाद ही उनका तबादला हो गया था। ऐसे में उस मामले में कार्रवाई क्यों नहीं हुई इसको लेकर भी जवाब मांगा गया है। उस समय नगर विकास निदेशालय में तैनात निदेशक नेहा की तरफ से भी मामले में पत्र लिखा गया था। हालांकि मामला पूरी तरफ से दब गया था। अब मेयर के पत्र के बाद एक बार फिर से यह मामला गर्म हो गया है। आरोप है कि उस समय फाइल को कुछ कर्मचारियों की मिलीभगत से दबा दिया गया। निलंबन की कार्रवाई न होने पर नगर निकाय निदेशालय की तत्कालीन निदेशक नेहा शर्मा ने भी नगर आयुक्त को पत्र लिखकर कार्रवाई की रिपोर्ट मांगी थी।

दूसरे दिन शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई परीक्षा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। शनिवार को सिपाही भर्ती परीक्षा का दूसरा दिन है। परीक्षा केंद्रों के बाहर सुबह ही अभ्यर्थियों की कतार लग गई है। इसके साथ ही प्रवेश भी शुरू हो गया है। परीक्षा पांच दिनों में पूरी होगी। इसके लिए 48 लाख से ज्यादा अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। इस दौरान प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद नजर आ रहा है। राजधानी लखनऊ में परीक्षा के लिए 81 केंद्र बनाए गए हैं।

चप्पे-चप्पे पर पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं। परीक्षा केंद्रों पर जैमर लगाए गए हैं। 1871 सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जा रही है। निगरानी के लिए 173 लोगों की टीम तैनात की गई है। पहले दिन 21470 अभ्यर्थियों ने परीक्षा छोड़ दी। दोनों पालियों के लिए कुल 78,144 अभ्यर्थी पंजीकृत थे। यूपी के डीजीपी प्रशांत कुमार लखनऊ विश्वविद्यालय में परीक्षा केंद्र का निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं को देखा। उन्होंने कहा कि आज परीक्षा का दूसरा दिन है। सुचारुरूप से परीक्षा हो रही है। कहीं से भी कोई शिकायत नहीं आई है। सभी व्यवस्थाएं ठीक तरीके से चल रही हैं। उन्होंने कहा कि कल अनुचित साधनों का प्रयोग करत हुए पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। हमारी टीम लगातार नजर रख रही है। सभी केंद्रों पर लोकल पुलिस और अधिकारी तैनात हैं। एक-एक अभ्यर्थी को चेक किया जा रहा है। 10 पालियों में परीक्षा हो रही है जोकि पांच दिन चलेगी। शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षाएं हो रही हैं।

1871 सीसीटीवी कैमरों से की गई निगरानी

यूपी डीजीपी ने किया केंद्र का निरीक्षण

सिपाही भर्ती परीक्षा

फोटो: सुमित कुमार

हजारों अभ्यर्थी रहे अनुपस्थित

गोंडा शहर के 13 केंद्रों पर दूसरे दिन पुलिस भर्ती परीक्षा कड़ी निगरानी में हुई। दूसरे दिन की प्रथम पाली में 5232 अभ्यर्थियों को परीक्षा में शामिल होना था जिसमें में 3845 अभ्यर्थी शामिल हुए। 1387 अभ्यर्थियों ने परीक्षा छोड़ी है। पहले दिन की अपेक्षा दूसरे दिन अनुपस्थिति कम है। पहली पाली में सुबह 10 बजे से 12 बजे तक परीक्षा आयोजित हुई थी। जिसमें सुबह आठ बजे से ही अभ्यर्थियों का प्रवेश केंद्रों में हुआ और 9.30 बजे तक प्रवेश द्वार बंद हो गए।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।